

.. श्रीरुद्राष्टकम् ..

नमामीशमीशान निरबाणरूपं विभुं वयापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निरगुणं निरिबकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेहम् ॥ १॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोहम् ॥ २॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गतीरं मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम् ।
स्फुरन्मोलि कल्लोलिनी चारु गङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥ ३॥
चलत्कुण्डलं भ्रु सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचरमाम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सरबनाथं भजामि ॥ ४॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटीप्रकाशम् ।
त्रयः शूल निरमूलनं शूलपाणिं भजेहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ ५॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ ६॥
न यावत् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत् सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सरबभूताधिवासम् ॥ ७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोहं सदा सरबदा शत्रु तूभम् ।
जरा जन्म दुःखोष तातप्यामानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शङ्गे ॥ ८॥
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शत्रुः प्रसीदति ॥

॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं संपुरणम् ॥
